ज्ञान दान का पर्याय है शिक्षकः आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, उच्च शिक्षा मंत्री जितेन्द्रसिंह ने कहा शिक्षक और राजनेता समाज की सम्पति, मंत्री ने लिया आचार्यश्री से आशीर्वाद, शिक्षक कार्यशाला में अणुव्रत चिंतन पर हुआ मंथन

केलवाः 4 सितम्बर

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिष्ठाता आचार्यश्री महाश्रमण ने शिक्षक वर्ग को ज्ञान दान का पर्याय बताते हुए आह्वान किया कि वह देश की भावी पीढी के निर्माण में विद्यार्थियों को पुस्तकीय शिक्षा देने के साथ संस्कारों का ज्ञान देने का भी प्रयास करें। इससे जहां देश प्रगति के पथ पर आगे बढेगा वहीं संस्कृति के मूल्यों की भी रक्षा हो सकेगी। आचार्यश्री ने उक्त उद्‌गार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास में रविवार को राजसमंद जिले के शिक्षकों की कार्यशाला को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आज के परिवेश में विद्यार्थियों को कोरा बौद्धिक ज्ञान देने की नहीं वरन् मूल्यवान शिक्षा देने की आवश्यकता है। उसे अपने जीवन की पौथी से पढाएं ताकि वह जीवन में आत्मनिर्भर बन सके।

उन्होंने कहा कि अभिभावक तीन कारणों की पूर्ति के लिए अपने लाडले को विद्यालय की दहलीज तक ले जाते है। पहली उनकी सोच यह रहती है कि बरसों तक विद्यालय में रहकर उसका बच्चा ज्ञान से पारंगत होगा। दूसरा उसमें आत्म निर्भर और कमाई के लायक बनने की अग्रसर होगा। तीसरा उसके व्यवहार में सदाचार का समावेश होगा। शिक्षकों को इस धारणा को पूरा करने के साथ ही बच्चे के सर्वागीन विकास में अपनी सहभागिता का निर्वाह करना होगा। आज के परिवेश में अभिभावकों की आकांक्षाओं की पूर्ति विद्यालय, शिक्षण संस्था अथवा सरकार कर सकने में सक्षम है। वह वास्तव में भावी पीढी के निर्माण में अपना योगदान दे रहे है, लेकिन जो उनकी अपेक्षाओं में खरे नहीं उतर पा रहे है। उन्हें आत्मचिंतन करने की आवश्यकता है। यह विचार करने की जरुरत है कि शिक्षक या तो अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक नहीं है या फिर विद्याथी रुचि नहीं ले रहा अथवा सरकार की शिक्षा नीति त्रुटिपूर्ण है। शिक्षक पहले सेवक और फिर वेतनभोगी है। इसलिए सेवा करने की मानसिकता विकसित करनी होगी। आचार्यश्री ने जीवन के निर्माण में आत्मा और काया की आवश्यकता को प्रतिपादित करते हुए कहा कि इन दोनों के पृथक होने से जीवन बन ही नहीं सकता। केवल शरीर जीवन व्यतीत नहीं कर सकता और आत्मा को जीवन बिताने के लिए शरीर की

महत्ती जरुरत है। आत्मा शरीर से बाहर निकल जाती है तो शरीर केवल पार्थिव देह बनकर रह जाती है। दोनों मिश्रित है वही जीवन है। जीवन में बुद्धि का भी महत्वपूर्ण स्थान है, लेकिन इसकी एक सीमा निर्धारित है। शुद्ध चेतना से जितनी जीवन की सारगर्भिता है उतनी बुद्धि से नहीं। हम बुद्धि के पार्श्व में जीते है। उन्होंने मूर्खता और मूर्धता में अंतर परिभाषित करते हुए कहा कि मूर्खता को विज्ञान जगत में अज्ञानता का परिचायक माना गया है, जबकि मूर्धता अध्यात्म की साधना से दूर है।

अंधकार को मिटाएं वह गुरु

आचार्यश्री ने शिक्षक को विशिष्ट व्यक्ति को दर्जा देते हुए कहा कि यह बच्चों का निर्माण करने वाला होता है। यह अंधकार के स्याह को मिटाकर आलोक अर्थात् ज्ञान के प्रकाश से देश को को रोशन करने वाले होते है। यह विद्यार्थियों का नेक पथ पर चलने का मार्ग बताता है। जो अंधकार को मिटा दें यह सही मायनों में गुरु है। शिक्षकों को चाहिए कि वह बौद्धिकता, ज्ञानात्मकता के साथ सदाचार को ज्ञान देने का भी कार्य करें। आचार्यश्री गुरुदेव तुलसी ने देशभर में चलाए अणुव्रत आंदोलन के दौरान शिक्षकों को नैतिकता, सच्चाई का पाठ अपने विद्यार्थियों के साथ नशामुक्त देश की कल्पना को साकार करने का आह्वान किया था। आज नशामुक्त देश का सपना अधूरा है। इसे पूरा करने की आवश्यकता है। अणुव्रत सभी वर्ग के लिए महत्वपूर्ण है। चाहे वह शिक्षक हो या व्यापारी। नौकरीपेशा हो या श्रमिक वर्ग। अणुव्रत शिक्षक संसद से जुडे शिक्षकों से यह अपेक्षा है कि वे विद्यार्थियों को नैतिकता का पाठ पढाएं और उन्हें गलत संगत की राह पर जाने के लिए रोकने का प्रयास करें।

उन्होंने विद्यार्थियों से अपने गुरु के प्रति आदर भाव रखने का आह्वान करते हुए कहा कि हमेशा उन्हें प्रणाम करने की प्रवृति विकसित करें। उनसे प्रश्न पूछे और अपनी जिज्ञासा शांत करने का प्रयास करें। एक प्रसंग प्रस्तुत करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि आध्यात्म की विद्या विशिष्ट होती है। परमात्मा से छुपकर किसी कार्य की क्रियान्विति नहीं की जा सकती। विद्यार्थियों को पुस्तक के ज्ञान के साथ ईमानदारी का ज्ञान, संस्कार को पुष्ट करने वाला ज्ञान अर्जित करने के साथ ही सदैव नशामुक्त रहने की आवश्यकता है। हमें मूल्यवान शिक्षा देने की जरूरत है, ताकि बच्चे के उज्जवल भविष्य का निर्माण हो सकें।

शिक्षक और राजनेता समाज की सम्पति

प्रदेश के उच्च शिक्षामंत्री डॉ.जितेन्द्रसिंह ने शिक्षकवर्ग और राजनेताओं को समाज की संपति के रुप में परिभाषित करते हुए कहा कि यह हमारा दायित्व है कि हम अपना

धर्म निभाने का प्रयास करें। हमारा जीवन व्यक्तिगत नहीं है। हम कभी यह नहीं सोच सकते कि बस स्कूल गए और छुट्टी हो गई। हो गया आज का काम। हम काम नहीं अपना कर्म कर रहे है। हमें अपना धर्म निभाने की आवश्यकता है। यह नई पीढी के लिए आवश्यक है। देश और प्रदेश के विकास में योगदान देने का प्रयास करें।
आचार्यश्री ने जो गाइड लाइन बताई है उसके अनुसार विद्यार्थियों का भविष्य बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि महाश्रमणजी के आचार्यश्री पद पर सुशोभित होने के मौके पर मैंने एक वादा किया था कि सरदारशहर में चल रहे महाविद्यालय में पीजी स्तर तक जैनोलॉजी की शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था जल्द ही होगी। यह काम अब पूरा होने जा रहा है। सरदारशहर में शीघ्र ही जैनोलॉजी का विषय शुरू होगा। मंत्री डॉ.सिंह ने इस दौरान आचार्यश्री से आशीर्वाद लिया और स्वयं को धन्य माना कि जिनके आचार्य पद पर आसीन होने के समारोह में वे मौजूद थे। उनका आज उन्हें आशीर्वाद मिल रहा है।
मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि शिक्षक अपने दायित्व के प्रति सदैव गंभीर रहे। कालांतर से आज तक यही देखा और सुना गया है कि गुरु सबसे बडा होता है। इस नाम की सार्थकता तभी साकार होगी जब हम बालक, युवा और देश के हर नौजवान को ज्ञान के साथ संस्कारों की भी शिक्षा देने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि आज के प्रतिस्पर्धा के युग में इस तरह की शिक्षा देने की महत्ती आवश्यकता है। इस अवसर पर भीलवाडा जितले के आसींद कस्बे से आई बालिकाओं ने गीत का संगान किया। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया। आभार की रस्म सोहनलाल धाकड ने अदा की। प्रवचन के उपरांत तेरापंथ कॉन्फ्रेन्स हॉल में आयोजित अणुव्रत शिक्षक संसद में अध्यक्ष भीखमचंद नखत, मंत्री सोहन लाल धाकड, राष्ट्रीय सहसंयोजक धर्मचंद जैन, चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी, महाविद्यालय की व्याख्याता श्रीमती रचना तैलंग, साहित्यकार चतुर कोठारी, केलवा के प्रधानाचार्य विद्याधर पुरोहित, तासोल के सोहनलाल रेगर, आईडाना के देवीलाल व भीम के नरेश डांगी ने विचार व्यक्त किए। इस दौर अणुव्रत के विभिन्न विषयों पर गहन मंथन किया गया। कार्यशाला में जिले की छह तहसीलों के 54 गांव के 133 संभागियों ने हिस्सा लिया।

छह दल की नियुक्ति

आचार्यश्री महाश्रमण के चातुर्मास के अर्न्तगत अणुव्रत समिति की ओर से केलवा में एक सघन नशामुक्ति अभियान चलाया जा रहा है। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल एवं जनसंपर्क प्रभारी मुनि जयंतकुमार के निर्देशन में अणुव्रत कार्यकर्ताओं के छह दल

नियुक्त किए गए है। इसमें मुकेश कोठारी, प्रवीण कोठारी, रजनीश बोहरा, गौतम कोठारी, श्रीमती रेखा कोठारी, श्रीमती नीलू कोठारी को प्रमुख बनाया गया है। गांव के प्रत्येक मौहल्ले में अणुव्रत कार्यकर्ता प्रमुख व्यक्तियों को साथ लेकर घर–घर नशामुक्ति की दस्तक दे रहे है। काफी लोगों ने इनकी प्रेरणा से व्यसन त्याग दिया है। आचार्यश्री के निर्देशानुसार यह निर्णय किया गया है कि केलवा के लोगों को नशामुक्त करने के लिए एक सुनियोजित कार्यक्रम चलाया जाएगा।